॥ श्रीगुरु दत्त प्रसन्न. ॥

संगीत बालप्रकाश.

अर्थात्

(हारमोनियम प्रकाश.)

 **तृतीय भाग.** 

संपादक, मुद्रक, और प्रकाशक.

श्रीमान् पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर.

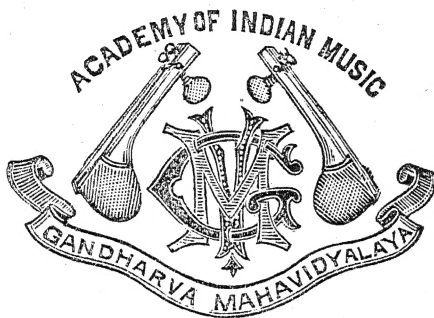
गायनाचार्य, मास्टर ऑफ इंडियन म्युझिक, प्रिन्सिपॉल,

गांधर्व महा विद्यालय—बंबई द्वारा रचित.

सन १९२१.

चतुर्थावृत्ति] प्रती २००० [मुल्य १ रुपया.

"गांधर्व महा विद्यालय" प्रेस, सँडहर्स्ट रोड-बंबई.


ACADEMY OF INDIAN MUSIC
GANDHARVA MAHAVIDYALAYA



☞ हमारे यहां के लेखनपद्धति (नोटेशन सिस्टम्) को समजने के लिये **संगीत तत्वदर्शक** को पढना चाहिये.



प्रस्तावनिका.

इस **संगीत बालप्रकाश** तृतीय पुस्तक को प्रथम पुस्तक में कहे हुए अनुसार बनाया है, इस में १९ रागों मे वडे भक्तोंके बनाए हुए भजनों को लिखा है। इस में लिखे हुए भजनों से ईश्वर को भी प्रसन्नता होती है जैसा के श्रीमद्भागवत में लिखा है:—

नाहं वसामि वैकुंठे योगिना हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

इस वास्ते सब से प्रार्थना है कि इन तीनों **संगीत बालप्रकाश** अथवा हारमोनियम प्रकाश के पुस्तकों का क्रम से याद करना ताके अपने को आनंद और ईश्वरका भजन होगा।

शुभम्।

भवदीय,

विष्णु दिगंबर पलुस्कर,

अनुक्रमणिका.

॥ श्रीगुरु दत्त प्रसन्न ॥

राग खमाज.

इस राग मे दो निषाद लगते है एक शुद्ध दुसरा अतिकोमल बाकीके सब शुद्ध स्वर.

ताल दादरा.

(सोरठा).

मूक होई बाचाल, पंगु चढे गिरिवर गहन।
जासु कृपा सुदयाल, द्रवौ सकल कलिमल दहन ॥

तार		स स	
मध्य	ग ग प म ग म रि	ग प ध	नि प
मन्द्र			

मू क हो . . . इ बा . चा . ल . पं
१ ३ १ ३ १

तार			
मध्य	ध प म ग	रि रि ग स रि ग ग .	नि
मन्द्र			

गु च ढे . गि रि व र ग ह न जा
३ १ ३ १

तार	स़	स़ रि़ स़ स़
मध्य	नि़ नि़ ध़ नि़	४ नि़नि़
मन्द्र		

सु कृ पा . . . सू द या . . ल
२ १ ३

तार	स़	स़
मध्य	नि़ ४नि़ ध़ प़ . ४	ग़ म़ प़ ध़ नि़
मन्द्र		

द्र वौ स क ल क लि म . ल .
१ ३ १

तार		
मध्य	४निधपमग	रिगमपध ४नि धपम गरि स
मन्द्र		

द ह न . . . .
३ १ ०

राग आसावरी संपूर्ण.

इस में गंधार, धैवत और निषाद अतिकोमल. आरोह में गंधार निषाद वर्ज.

तीनताल.

कौन यतन बिनती करिये ।
निज आचरण विचारि हारि हिय मानि जानि डरिये ॥
जेहि साधन हरि द्रवहु जानिजन सोहठि परि हरिये ॥
जाते विपति जाल निशिदिन दुख तेहि पथ अनुसरिये ॥
जानत हूं मन बचन कर्म, पर हित कीन्हे तरिये ॥
सो विपरीत देख पर सुख विन कारण ही जरिये ॥
श्रुतिपुराण सब को मत यह सतसंग सु दृढ धरिये ॥
निज अभिमान मोह ईर्षा वश तिन हिन आदरिये ॥
सन्तत सोई प्रिय मोहि सदा जाते भव निधि परिये ॥
कहो अब नाथ कौन बसते संसार शोक हरिये ॥
जब कब निज करुणा स्वभावते, द्रवहु तो निस्तरिये ॥
तुलसीदास विश्वास आन नहिं, कत प[illegible] पच मरिये ॥

तार		
मध्य	पनिध · निधपमपधमप	ग रि स रि स · ४
मन्द्र		

कौ . . नयतनबि . न . तीकरिये .
३ २ १ २

तार		
मध्य	स स स रि ऽ	ग रि रि रि स स ॰ऽ
मन्द्र	ध ध ध	

नि ज आ च र ण वि   चा री हा री हि य
३ २ १ २

तार	स ॰ ऽ	स रि ग रि स
मध्य	स रि म प ध	नि ध
मन्द्र		

मा नि जा नि ड री   थे . . . . . .
३ २ १ २

तार			स
मध्य	ध म ॰ ऽ	म म प ध ध ध ध ॰ऽ	ध ध
मन्द्र			

. .   जे हि सा ध न ह रि   द्र व हु

तार	स स स स . ५	स स स रि . ५
मध्य	नि	ध ध ध
मन्द्र		

जा . नि ज न   सो ह ठि प रि ह रि

२   २   २

तार	स रि ग रि स स .
मध्य	नि ध प . ४ म प नि
मन्द्र	

ये . . . .   जा ते . वि

१   २   ३   २

तार		
मध्य	ध प ग	० ग रि स रि रि स स . ४ स रि
मन्द्र		

प ति जा . . ल नि श दि न दु ख   ते हि

१   २   ३

तार	सुसुरि·ॅ	सुरिमुगुरिसु
मध्य	मुपुधु	निधुपु·ॅ
मन्द्र		

प थ अ नु स री ये . . . .
२ १ २

राग तिलंग ओडव.

इस में रे, और ध, वर्ज, निषाद दो एक अतिकोमल और दूसरा शुद्ध बाकीके सब शुद्ध स्वर. अतिकोमल नि, के वास्ते निशानी होगी.

तीनताल.

—:o:—

दिनानाथ अब बार तुह्मारी ।
पतित उधारन बिरद जानके बिगरी लेहुँ सवारी ॥
बालापन खेलतही खोयो युवा विषयरत माते ।
वृद्ध भये सुधि प्रगटी मोको दुखित पुकारत ताते ॥
सुत निज ज्योतिय तज्यों भ्रांत ताजि तन त्वच भई जु न्यारी ॥
श्रवणन सुनत चरण गति थाकी नयन भयो जल धारी ॥
पालित केश कफ कंठ विरोध्यो कलन परे दिन राती ॥
माया मोह न छांडे तृष्णा ये दोऊ दुख दाती ॥
अब यह व्यथा दूर करिवे को और न समरथ कोई ॥
सूर दास प्रभु करुणा सागर तुम ते हो सो होई ॥

तार	स
मध्य	९ ग म प ψ नि प नि ψ नि प म ग.म प
मन्द्र	

दी . ना . . . ना . थ अ व बा र तु

२ ३ २

तार	
मध्य	प ग म ग ९ स ९ स ग म प नि नि . ψ
मन्द्र	नि

ह्मा . . री . प ति त उ धा र न

१ २ ३ २

तार	स स स . ψ
मध्य	नि नि नि ग म प ψ नि प नि
मन्द्र	

बि र द जा न के बि ग री . . ले

१ २ ३ २

तार	स स	स	
मध्य		नि Ψ नि प	ϒ ग म प नि नि
मन्द्र			

हुँ स बा . . री बा . ला . प
१ २ ३ २

तार		स स स स स . ϒ
मध्य	नि नि	नि ग म प
मन्द्र		

न खे ल त ही खो . यो यु वा वि
१ २ ३

तार		स स
मध्य	नि नि नि नि	Ψ नि Ψ नि प ग म ϒ
मन्द्र		

ष. य र त मा ते . . . .
२ १ २

तार		सं गं सं •
मध्य	स ग म प नि नि	नि ४ नि
मन्द्र		

वृ द्ध भ ये सु धि प्र ग टी मो ' .
३ २ १ २

तार		सगमपमगस
मध्य	प • ४ स ग म प नि नि	नि
मन्द्र	नि	

को दु खि त पु का ऽ त ता . . . . . ते .
३ २ १

राग देश संपूर्ण.

इस राग में दो निषाद शुद्ध और अतिकोमल बाकीके सब शुद्ध स्वर, अतिकोमल नि, के वास्ते निशानी होगी. आरोह में गंधार धैवत वर्ज.

ताल दादरा.

तूं दयाल दीनहूं तु दानी हुं भिकारी ।
हुं प्रसिद्ध पातकी तूं पाप पूंज हारी ॥
नाथ तूं अनाथ को अनाथ कौन मोसो ।
मो समान आरत नांहि आरत हर तो सो ॥
ब्रह्म तूं है जीव तूं, ठाकुर हुं चेरो ।
तात मात गुरु सखा तूं, सब विध हित मेरो ॥
तोहिं मोहिं नातों अनेक, मानिये जो भावै ।
ज्यों त्यों तुलसी कृपाल, चरण शरण पावै ॥

तार		
मध्य	रि ग रि स स • ऽ	रि म म प
मन्द्र	नि	

तू • द या • ल दी • न हो

१ २ १ २

तार		स स रि	
मध्य	नि • ऽ	नि • ऽ	प ध
मन्द्र			

तु दा नी हूं भि का •

१ २ १

तार			स स स
मध्य	म ग रि • ऽ	नि नि नि नि • ऽ	
मन्द्र			

री • • हो प्र सि द्ध पा त की

२ १ २ १ २

तार	रि · ॠ		
मध्य	नि	॰नि ध प प · ॠ	धसग रि · ॠ
मन्द्र			

तू · पा प पुं ज हारी · ·
१ ३ १ २

तार		स स स	स स स स · ॠ
मध्य	सपनि नि · ॠ	नि	
मन्द्र			

ना थ तू अ ना थ को अ ना थ कौ न
१ ३ १ ३ १ ३

तार	स रि म ग रि · ॠ	स स · ॠ	स
मध्य		नि नि	नि
मन्द्र			

मो सो · · मो स मा न आ र
१ ३ १ ३ १

तार	स़ रि रि़ . ॠ		
मध्य		४ नि़ धपपप . ॠ	धम ग रि़ . ॠ
मन्द्र			

त न हीं   आ र त ह र   तो सो . .
३   १   ३   १   ३

राग आसा

इसमें सब शुद्ध स्वर लगते है.

ताल दादरा.

दीनन दुख हरनदेव संतन हितकारी ॥ धृ० ॥
अजामील गीधव्याध इनमे कह कौन साथ ।
पंचीहूं पद पढात गणिकासी तारी ॥
ध्रुव के शिर छत्र देत । प्रल्हाद को उबार लेत ॥
भक्त हेत बांधो सेत । लंक पुरी जारी ॥
तंदुल देत रीझ जात । सागपात सो अघात ॥
गिनत नही झूटे फल । खाटे मीठे खारी ॥
गजको जब ग्राह ग्रस्यो । दुःशासन चीर खस्यो ॥
सभा बीच कृष्ण कृष्ण । द्रोपदी पुकारी ॥
इतने हरी आय गये । बचन न आरूढ भये ।
सूर दास द्वारे ठाडो । अन्धरो भिकारी ॥

तार			
मध्य	प म ग रि स •	रिरिरिसस	रिममपप •
मन्द्र			

दी न न दु ख हर न देव संत नाहित
१ ३ १ ३ १ ३

तार		सस	ससससस •	सरिरि
मध्य	प पमध •	पध		धध
मन्द्र				

का री . . अजामीलगीधव्याध इनमेंकह
१ ३ १ ३ १ ३ १ ३

तार	ग रि स स •	ससरिस •	
मध्य			नि नि धध
मन्द्र			

कौ न सा ध पं छीहू . प द प ढा
१ ३ १ ३ १ ३

तार			
मध्य	ध • ॰	ध ध प प • ॰	प प म ध • ॰
मन्द्र			

त ग णि का सी ता री . .
१ ३ १ ३

राग खमाज संपूर्ण.

इस में दो निषाद लगते हैं एक शुद्ध और दुसरा अतिकोमल, अतिकोमल निषाद के वास्ते निशानी होगी. बाकी के सब शुद्ध स्वर.

ताल दादरा.

मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरा न कोइरे प्रभू ॥
जाके शिर मोर मुगुट मेरो पति सोई । शंख चक्र गदा पद्म कंठ माल सोई ॥
तात मात सुत न भ्रात आपनो न कोई । छांड दई कुलकी कान क्या करेगा कोई॥
संतन संग बैठ बैठ, लोक लाज खोई । अब तो बात फैल गई जाने सब कोई ॥
असवन जल सींच सींच प्रेम बेल बोई । मीरा प्रभु लगन लगी होनी हो सो होई॥

तार		
मध्य	स स स	
मन्द्र	नि नि	ध ध नि नि ध प ध

मे रे तो गि री ध र गो पा . . ल
१ ३ १ ३

तार			
मध्य	स स	ग ग रि रि रि ग म	म ग रि
मन्द्र	ध नि		नि

दू स रा न को ई रे प्र भु . . मे . रे तो
१ ३ १ ३ १ ३

तार			
मध्य	स स		स ग ग म
मन्द्र		Yनि ध Yनि नि ध प ध	

गि रि ध र गो पा . . ल जा के शि र
१ ३ १ ३

तार			
मध्य	प प प प प	ग म ध प	प मगमग □Y
मन्द्र			

मो र मु गु ट मे रो प ति सो . . . ई .
१ ३ , १ १ २

तार			
मध्य	म म म म	ग म ध प ग म ग	रि ग रि
मन्द्र			

शं ख च क्र ग दा . . प . द्म कं . ठ
१ ३ १ ३ १

तार			
मध्य	स स	स रि ग म प ध प म ग	रि ग रि स
मन्द्र	नि	नि	

मा . ल सो . ई . . . . मे . . रे
३ १ ३ १

तार		
मध्य	स स	
मन्द्र	नि	५ नि ध ५ नि ५ नि ध प ध

तो गि रि ध र गो पा . . ल
३ १ २

राग सिंधोरा छायालगत्व.

ग, अतिकोमल ध, शुद्ध और अतिकोमल नि, शुद्ध और अतिकोमल, अति- कोमल ध, और नी, के वास्ते निशानी होगी. बाकी के सब शुद्ध स्वर.

ताल दादरा.

धन्य दीन दयालु तूं प्रभु धन्य तूं परमेश्वरा ।
धन्य यह कृपा है तेरी धन्य तूं परमेश्वरा ॥
धन्य दया दीन पर दाता तूंहि संसारदा ।
धन्य करूणा सिंधु स्वामी जो की सेनविशारदा ॥

धन्य महिमा अकथ तेरी । अन्त कोई न पावदा ॥ हार के पीछे रह जावें। कथन नु जो धांवदा ॥ जीव सब संसार दे । गिननी न आखी जांवदी ॥ अन्न पानी दान करदा । होर सब मन भांवदी ॥ तेरी महिमा तू ही जाने। होर तै वड आईयां ॥ क्षुद्र जंतु आखे सोई । मन विषे जो आईयां ॥ औखी वाट पहाडदी । क्यौं चढ सके पिपीलिका ॥ अन्ध चाहे चन्द्र वेखां। मशक गज डीलका ॥ भील वैल न वन सके । पिंगुल उलंघे मेरु क्यों ॥ मूक वक्ता होवे नाहीं । रागी क्यौ कर गुंग हो ॥ होये कायर खेत मांगे । रचे ग्रंथ न बावला ॥ कहां क्यौ कर गुण मै तेरे। बुद्धी हीन उतावला ॥ हाथ जोड नवाये मस्तक । चरण वंदन कीजिये ॥ धन्य प्रभु महिमा तेरी। जिस रटे सुख दीजिये । सब ही पूत कपूत तेरे । अन्त तैनूं लाज है ॥ नाम धन प्रभु दान कीजे । सोई हमरे काज है ॥

तार			सा
मध्य	प प प ध	प ध ४ नि ध प ग म	प ध ४ नि
मन्द्र			

धन्य दीन द . यालतुप्रभु धन्य तु प
१ ३ १ ३ १ ३

तार				
मध्य	नि	ध निधप	गगगम	प धप
मन्द्र				

र मे .श्वरा. धन्य यह कृपा है
१ ३ १ ३ १

तार				
मध्य	गग	सरिगमपम	रिगरिस	नि निनि
मन्द्र				

तेरी धन्य तुपर . मे . श्वरा. ध न्य द
३ १ २ १ ३ १ ३

तार		सससस		स
मध्य	नि		ध निधपध	नि
मन्द्र				

या दीन पर दा तातूहीसं सा .
१ ३ १ ३ १

तार			
मध्य	निधप . ँ	ध निधप	धप मप म रि
मन्द्र			

र दा . ध . न्य क रु णा सिं . धु स्वा
३ १ ३ १ ३

तार			
मध्य	ग रि	स रि ग म प म	रि ग रि स
मन्द्र			

. मी जो कि से न वि . शा . र दा
१ ३ १ ३

तार			
मध्य	नि धऽ	प म	ग रि
मन्द्र			

आ
१ ३ ३ १ ३

तार		
मध्य	स रि ग म प म	रि ग रि स ऽऽ
मन्द्र		

१ ३ १ ३

राग पहाडी संपूर्ण.

इस में सब शुद्ध स्वर.

ताल केरवा.

हरी ना भजे सब बिती उमरीया ।
मिथ्या जन्म आय वह खोयो नेकुर हिन कहे की खबरीया ॥
नित मतवाद करत जो आनंद, नाहि भय यम कीरे नगरीया ।
ताजि छल छिद्र सर्वजन चेत हूं, गह हूं प्रभु पद की गडरिया ॥

तार		
मध्य	० ग ग ऽ स रि ग ग रि · ऽ	स
मन्द्र		नि ध प
	ह री · न · · भ ·	जे · स ब

१ २ १ २

तार			
मध्य	० ग म ग	ग रि स रि ग	० प प प
मन्द्र			

. बि ति उ म री या . . . बि ति उ

१ २ १ २ १ २

तार			
मध्य	प प प ध नि ध	० म म ग	ग रि स स रि ग
मन्द्र			

म री या . . . . बि ति उ म . रि या . .

१ २ १ २ १ २

तार					
मध्य	० ग प	प प ध	ऽ ध ध ध	प ध नि ध प ·ऽ	० म ग ग
मन्द्र					

. मि थ्या ज़ न्म आ . य व ह खो . . . यो . ने कु र

१ २ १ २ १ २ १ २ १ २

तार			
मध्य	गुगुमुगुरि	गुरिसु९सु	सुरिसुरिगु ५५
मन्द्र			नि

हि न क है . की . . ख ब री . या . .
१ २ १ २ १ २

राग खमाज.

इस राग में दो निषाद लगते हैं एक शुद्ध और दूसरा अतिकोमल अतिकोमल नी, के वास्ते निशानी होगी बाकीके शुद्ध स्वर.

ताल धुमाली.

ह्माने पार उतारोजी थाने निज भक्तनकी आन ।
हमरे संकट नेकन चितवो अपनोही करजान ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह वश भूल्यो पद निर्वान ॥
अब तो शरण गही चर्णन कि मत दिजो मोहिजान ॥
लख चौरासी भटकत भटकत नेक न परि पैछान ॥
भव सागर में बहो जात हौ राखिये श्याम सुजान ॥
हौं तो कुटिल अधम अपराधी नहीं सिमरधो तेरो नाम ॥
नरसी के प्रभु अधम उधारन गावत वेद पुराण ॥

तार		सु रि सु
मध्य	९ धु	नि धुपुमुगुरिंसुसु
मन्द्र		

. ह्माने . . रं उ ता . . . रो
३ २ २ ३ २

तार		
मध्य	रिगमपधपमग॰रिमग॰	ग रि स स
मन्द्र		नि नि

जी . . . . था ने . नि ज भ क्त न की
१ २ ३ २ १ २ ३ २

तार			
मध्य	स ० स	० रि रि म	म प म ० रि प प
मन्द्र			

आ . न . ह म रे सं क ट . बे क न
१ २ ३ २ १ २ ३ २

तार		
मध्य	प प प ०म म प	प . ४ ४ नि ध प ध ४ नि
मन्द्र		

चि त वो . आ प नो ही क र जा . .
१ २ ३ २ १ २ ३

तार			
मध्य	ध प म ग रि	स स ९	
मन्द्र		नि	

. . . . न
२ १ २

राग काफी.

इस राग में दो गंधार दो निषाद, अतिकोमल नी, और ग, के वास्ते निशानी होगी, बाकीके सब शुद्ध स्वर.

तीनताल.

उधो करमनकी गति न्यारी ।
सब नदिया जल भरभर रहिया सागर किस विध खारी ॥
उज्वल पंख दिये बगुलाको कोयल किस विधकारी ।
सुंदर नयन दिये बगुलाको बनबन फिरत उजारी ॥
मूरख मूरख राजे कीने । पंडित फिरत भिखारी ॥
सूरश्याम मिलनेकी आशा । छिनछिन बीतत भारी ॥

तार		
मध्य	रि ♭ग रि रि . ♭ग रि स रि	प प प प
मन्द्र		

उ धो क र म न की . ग त न्या री
३ २ १ २

तार	
मध्य	म ग म •४म ४नि ४नि ४नि ४नि प ध
मन्द्र	

. . . . स ब न दि या जल

३ २

तार	स रि स
मध्य	४नि ४नि ध म ग म •४स ४नि ध
मन्द्र	

भ र भ र र ही यां सा ग र कि स

१ २ ३ २

तार			
मध्य	प म	स रि ग म प ध प म प४	स ध ४नि
मन्द्र			

वि ध खा री . . . . उ ज्व ल

१ २ ३

तार	स सु	स रि सु रिसु रिसु
मध्य	नि	ध Y नि • Y Y नि
मन्द्र		

पं ख दी ये व गु ला को   को य ल कि स
२ १ २ ३ २

तार		सु
मध्य	Y नि धु • Y	Y नि Y नि धु Y नि ऽ पु ध ऽ Y
मन्द्र		

गु ण   का री . . . . . .
१ २

तार		
मध्य	Y ग Y ग Y ग रि Y ग स रि	प प म ग रि
मन्द्र		

सुं द र न य न मृ गा को दी . .
३ २ १

तार	रिरिसरि सु
मध्य	ग१ म. ४स नि ४नि ध प
मन्द्र	

. नो ब न . ब न फि र त उ .
३ २

तार	स रि स
मध्य	ग म प ध ४नि ४नि ध प म ग म४
मन्द्र	

जा . . . . री . . . . .
१ २

राग गारा.

इस राग में निषाद अतिकोमल, गंधार दो, अतिकोमल और शुद्ध, अतिकोमल गंधार के वास्ते निशानी होगी सब बाकीके शुद्ध स्वर.

तीनताल

आखियां हरी दरशन की प्यासी ।
देख्यो चाहत कमल नयनको निशिदिन रहत उदासी ॥
केशर तिलक मोतियन की माला । वृन्दा बन के वासी ॥
नेह लगाय त्याग गए तृण सम । डार गए गल फांसी ॥
काहु के मन की कोन जानत, लोगन के मन हांसी ॥
सूरदास प्रभु तुमरे दरस बिन, लेहों करवट काशी ॥

तार	रिरि ४ गसरिस	स
मध्य	९ ध नि नि ध मपध	
मन्द्र		

अ खि यां ह री द र स न की . प्या . सी
२ ३ २ १

तार	ΥT स रि ग म म . ४	ग म ग रि म ग
मध्य	ध	
मन्द्र		

. दे ख्यो . चा ह त क म ल न य न
२ ३ २ . १ २

तार	स . ४ स स रि म	४ ग रि
मध्य	ध नि ध नि	
मन्द्र		

को नि शि दि नि र ह त उ दा सी
३ २ १

राग भुपाली.

———:o:———

इस में निषाद मध्यम वर्ज बाकीके सब शुद्ध स्वर.

ताल दादरा.

नमामि भक्त वत्सलं । कृपालु शील कोमलं ॥

भजामिते पदाम्बुजं । अकामिनां स्वधामदं ॥

निकाम श्याम सुंदर । भवाम्बुनाथ मन्दरम् ॥ प्रफुल्ल कंज लोचनं । मदादि-दोषमोचनम् ॥ प्रलंब बाहु विक्रमं । प्रभो ऽप्रमेय वैभवं ॥ निषंग चाप सायकं । धरे त्रिलोक नायकम् ॥ दिनेश वंश मण्डनं । महेश चाप खण्डनम् ॥ मुनीन्द्र सन्त रंजनं । सुरारी बृन्द भंजनम् ॥ मनोज वैरी वन्दितं । अजादि देव सेवितम् ॥ विशुद्ध बोध विग्रहं । समस्त दुःख तापहम् ॥नमामि इन्दिरापति । सुखाकरं सतांगतिं ॥ भजे सशक्ति सानुज । शचिपति प्रिजानुजम् ॥ त्वन्दन्घ्रि मूल ये नरा । भजन्ति हीन मत्सरा ॥ पतन्ति नो भवार्णवे । वितर्क वीचि संकूले ॥ विविक्त वासिनः सदा । भजन्ति मुक्तये मुदा ॥ निरस्य इन्द्रियादिकं । प्रयान्ति ते गतिं स्वकाम् ॥ त्वमेकमद्भूतं प्रभुं । निरीह-मीश्वरं विभुम् ॥ जगद्गुरुं च शाश्वतं । तुरीयमेक केवलम् ॥ भजामि भाव वल्लभं । कुयोगिनां सुदुर्लभम् ॥ स्वभक्त कल्प पादपं । समस्त सेव्य मन्वहम् ॥ अनूप रूप भूपतिं । नतोहमुर्विजापतिम् ॥ प्रसीद मे नमामि ते । पदाब्ज-भक्ति देहि मे ॥ पठंति ये स्तवम्मिदं । नरादरेण ते पदम् ॥ व्रजंति नात्र संशयं । त्वदीय भक्तिसंयुतम् ॥

तार			
मध्य	स स रि	ग ध प ऽ	धपगस रि
मन्द्र	ध ध		•

न मा मि भ क्त - व त्स लं कृ पा लु शी ल

१ ३ १ ३ १ ३

तार			स	स
मध्य	ग रि स ऽ ऽ	ग ग ग प ध	ध प ऽ ऽ	ध
मन्द्र				

को म लं | भ जा मि ते प दां बु जं | अ का
१ ३ | १ ३ १ ३ | १

तार		
मध्य	ध प ग ग रि ऽ	ग रि स ऽ ऽ
मन्द्र		

मि ना . मं स्व | धा म दं
३ | १ २

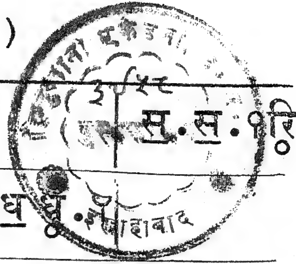
राग आसा.

—:o:—

इस में सब शुद्ध स्वर लगते है.

ताल दीपचंदि.

ठाकुर तब शरणाई आयो ।
उतर गया मेरा मनका संशा जब तेरा दरशन पायो ॥
अन बोलत मेरी वृथा जानी अपना नाम जपायो ।
बाह पकड लिन जान अपने गृह अंध कूपते मायो ॥
दुःखनाटे सुखसे हेत समाया । आनंद आनंद गुणगायो ॥
कहो नानक हरीबंधन काटे, बिजरत आन मिलायो ॥ १ ॥



तार		स . स . ऽ रि
मध्य	ध म म म . ऽ प प ध ध . ऽ	
मन्द्र		

ठा . कु र त ब श र णा ई . आ
१ २ ३ २ १ २ ३

तार	स स	स स स रि स ऽ
मध्य	नि ध प	नि नि ध प . ऽ
मन्द्र		

. यो . . . उ त र ग या . . . मे रा .
२ १ २ ३ २

तार		
मध्य	ध ध प म ग ऽ रि स	रि रि म म प प ध ध . ऽ
मन्द्र		

म न का . सं . शा . ज ब ते रा द र श न
१ २ ३ २ १ २ ३ २

तार	स . ९ स रि ग रि स	
मध्य	नि ध प . ४	प प ध . ४ ४
मन्द्र		

पा . . यो . . . . अ न बो
१ २ ३ २ १ २

तार	ससससस . ४	स रि स . ४ ग रि स	
मध्य		नि ध . ४	ध ध
मन्द्र			

ल त मे री वृ था . जा . नी . . अ प
३ २ १ २ ३ २ १

तार		स रि स
मध्य	ध . ९ ध . ध प . ४	प ध ध नि ध
मन्द्र		

ना ना म ज पा . यो . . . .
२ ३ २ १ २ ३ २

तार	.	स स॰स	रिरिरिस॰४गुरिस
मध्य	धु धु॰४	प॰ध	
मन्द्र			

. . बा ह प क ड ली ने ज न आ प ने
१ २ ३ २ १ २ ३ २

तार		
मध्य	नि धु॰४	धु ध ध धु॰४ नि नि धु निऽध पु॰४
मन्द्र		

. . अ ह अं ध कू . . . प ते
१ २ ३ २

तार	स रि सु
मध्य	पु ध ध नि धु धु धु पु॰ ४
मन्द्र	

मा . यो . . . .
१ २ ३ २

राग खमाज.

इसमें दो निषाद लगते है, शुद्ध और अतिकोमल अतिकोमल निषाद के, वास्ते निशानी होगी. बाकीके सब शुद्ध स्वर.

ताल दादरा.

जेहि सुमिरत सिद्धि होय, गण नायक करि वर वदन ।
करहूं अनुग्रह सोय, बुद्धि राशि शुभ गुण सदन ॥

तार			
मध्य	ग म	प प प प प ध	प ध नि ध
मन्द्र			

जे ही सु मि र त सि द्धी हो . . .

३ १ ३ १

तार			
मध्य	ध प म ग म	प प प प प ध	प ध नि ध
मन्द्र			

य जे . . ही सु म र त सि द्ध हो . . या

३ १ ३ १ ३

तार				
मध्य	ग ग	ग मपधप	गमगगग मपध	निधप
मन्द्र				

ग ण ना यककरी व र व द न . . . . . .

१ ३ १ ३ १

तार			स . स	रि स
मध्य	म ग	निनिनि	नि नि	नि
मन्द्र				

. . . क र हूं आ नु ग्र ह सो . .

३ १ ३ १

तार		स	
मध्य	निपध .	पगमप नि	धपमगगम
मन्द्र			

य बुद्धी रा . . शी शु भ गुणसदन .

३ १ ३ १ ३

तार			
मध्य	प ध	निं ध प म ग	
मन्द्र			

२

राग कालिंगडा परज.

इसमें रे, अतिकोमल, दो निषाद एक शुद्ध और अतिकोमल मध्यम दो शुद्ध, और तीव्रतर, तीव्रतर मध्यम और अतिकोमल निषाद के वास्ते निशानी होगी. बाकी के सब शुद्ध स्वर.

ताल धुमाली.

वंदो गुरुपद पद्मपरागा। सुरुचि सुवास सरस अनुरागा॥
अमिय मूरिमय चूरण चारू। शमन सकल भव रुज परिवारू॥

तार			
मध्य	ग ग म म ▲ म म	ग ग म म ग म प ध	ध ध प प प प
मन्द्र			

वंदोगुरु पद . पद्मपरागा. . . वंदोगुरुपद
१ २ ३ २ १ २ ३ २ १ २ ३ २

तार			
मध्य	० गुमुमुम▲मुगुमु	गुगुगुरिसुसु	सु रि
मन्द्र		नि	

. पद्मपरा गा . . सुरुचीसुवासस र स

१ २ ३ २ १ २ ३ २ १

तार		सुसुसुसुसुसु	०सुसु
मध्य	सुरिरि सु ० ४	नि	
मन्द्र	निनि		

अनुरा . . गा अमीयमूरिमय . चूर

२ ३ २ १ २ ३ २ १ २

तार	सुसुसु रिगरि	रि सु	
मध्य		नि धु पु पु पु पु	पु
मन्द्र			

णचारु . . . शम न सकलभव रु

३ २ १ २ ३ २ १

तार		
मध्य	४नि ध प म प ध प म ग रि स	
मन्द्र		

ज परी वा . . . रु . . .
२ ३ २

राग छायालगत्व भैरवी.

इस में ग, ध और नी, अतिकोमल बाकीके सब शुद्ध स्वर.

ताल केरवा.

बीत गये दीन भजन बिनारे ।
बाले अवस्था खेल गमायो । जब जवानी तब मान कियारे ॥
लाहे कारण मूल गमायो । अजहून मिटि तेरी मनकी तृष्णारे ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो । पार उतर गये सन्त जनारे ॥

तार				
मध्य	१गमगरि	सरिग	५४ पम ग रि	स स
मन्द्र		नि		

.बीतगये दि न . . भ ज न बि ना रे
१ ३ १ ३ १ ३ १ ३

तार		
मध्य	०ग म रि ग ऽरि	स स रि ग म प म
मन्द्र		नि •

.बी त ग . ये दी . न . . . . .
१ ३ १ २

तार			ससससस स • ४
मध्य	ग सपम ऽगरि	स स.४	
मन्द्र			

. .भ ज .न वि ना रे बा ले अ व स्था
१ २ १ २ १ २

तार	स	
मध्य	नि नि निधधप • ४	प प प प ऽप ध नि
मन्द्र		

खे ल ग .मा .यो . ज ब ज वा .नी त ब
१ २ १ २

राग मारवा.

सा, री, ग, म,

इसमें प, वर्ज रि, अतिकोमल, म, तीव्रतर, ध, कोमल बाकीके शुद्ध स्वर.

एक ताल.

तार			
मध्य	रिगम	धमधममगमगगरिगरि	रि स
मन्द्र	नि		नि
	२ २	१ ३ २ ३ २ २	१ ३

तार			
मध्य	स॰१ रिग	रिगमगमधमधनि	धमधमगम
मन्द्र	नि		
	२३ २	२ १ ३२ ३२ २	१ ३२ ३

तार				
मध्य	गरिग	रि रिस स॰४	धमधम	गमगम
मन्द्र		नि नि		
	२ २	१ ३ २ ३	२ २	१ ३

तार	स०रिगरिगम	गरि रि . ऽ म
मध्य	ध	निधरि.ऽ
मन्द्र		

२ ३ २ २ १ ३ २ ३ २

तार	ग रि ग	रि रि
मध्य		नि नि ध नि ध म ध
मन्द्र	·	

२ १ ३ २ ३ २

तार		
मध्य	म ग म	ग रि ग रि रि स . ऽ
मन्द्र		नि

२ १ ३ २ ३

राग केदार.

——:०:——

इसमें गंधार वर्ज, मध्यम दो, निषाद दो, अतिकोमल निषाद और तीव्रतर मध्यम के वास्ते निशानी होगी. बाकीके सब शुद्ध स्वर.

एकताल.

तार		
मध्य	सससममपपपध४ निधप▲मप	▲मपध▲मप.४
मन्द्र		

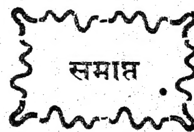
१ ३ २ ३ २ २ १ ३ २

तार		ससरिस	ममरिसप
मध्य	ममपमरिस	ममपप निधप	
मन्द्र			

३ २ २ १ ३ २ ३ २ २ १ ३ २

तार	मरिसरिस	
मध्य	निध	प१▲मपध▲मपममपमरिस
मन्द्र		

३ २ २ १ ३ २ ३ २ २



जादा पत्रक.

राग भैरवी छायालगत्व.

इस राग में रे, ग, ध, नि अतिकोमल. दो मध्यम शुद्ध और तीव्रतर, तीव्रतर म के वास्ते निशाणी होगी. (तीनताल.)

तार		
मध्य	मगरिस सस	ध.१धनिनिध. मगमनिध
मन्द्र	नि	

स रस्वतीशा . र दा विद्या . दा . निदयानी
३ २ १ २ ३ २

तार		
मध्य	पगमरिरिस सगम पपध प	ग ग मरिरि
मन्द्र	नि	

. दुख ह र नि जग त ज न निज्वा . लामुखीमा .
१ २ ३ २ १ २

तार		सस	सस सग
मध्य	स	पध नि	पध नि निनि
मन्द्र			

ता कीजे सुदृष्टीकीजे सु दृष्टी से व क जा
३ २ १ २ ३ २

तार	म ग रि	स स ग रि स
मध्य		नि प ध प ग ग रि ग
मन्द्र		

न इ त नो अ प नो क र ब क् स दी . . .
१ २ ३

तार		
मध्य	स स प ध	प म △ म म ग म ग रि ० स प प
मन्द्र		

. जे ता . न ता . ल क र सु हा ग बु ध
२ १ २ ३

तार		स
मध्य	ध प ०	प ध नि नि ध प म ग रि स स
मन्द्र		

आ लं का . . . . र
२ १ २